Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वॉच ग्रुप) की द्वितीय बैठक की संस्तुतियाँ

दिनॉक : 22 अप्रैल, 2015
समय : 11.00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2015–16 की दूसरी बैठक प्रो. राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 22 अप्रैल, 2015 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निदेशक, मौसम विज्ञान विभाग, अमौसी, लखनऊय न.दे. कृषि, प्रौ. विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद के मौसम वैज्ञानिकय कृषि विभाग, उद्यान विभाग, गन्ना विभाग, वन विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 22 अप्रैल से 28 अप्रैल, 2015 तक) प्रदेश में इस सप्ताह मौसम मुख्यतया प्रथम तीन दिन शुष्क तथा शेष दिनों में शुष्क–आर्द्र रहेगा। दिनांक 25 एवं 26 अप्रैल को पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ जनपदों में कहीं–कहीं हल्की वर्षा होने के आसार हैं। दिनांक 26 अप्रैल को पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हल्की वर्षा होने की सम्भावना है। 27 अप्रैल को उत्तर प्रदेश के उत्तरी हिस्से में हल्की वर्षा होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में कहीं–कहीं ओले पड़ने की सम्भावना है। इस सप्ताह प्रदेश में मुख्यतया प्रारम्भ के तीन दिनों में उत्तरी–पश्चिमी तथा शेष दिनों में पूर्वी तथा दक्षिणी–पूर्वी हवाएँ औसतन 5–8 कि.मी./घण्टा की गति से चलने की सम्भावना है। अधिकतम तापमान औसत रूप से सामान्य से 2–3 डिग्री अधिक रहने की सम्भावना है। न्यूनतम तापमान सभी अंचलों में औसत रूप से सामान्य से कम रहने की सम्भावना है। सापेक्षित आर्द्रता 80–90 प्रतिशत तथा न्यूनतम आर्द्रता 35–50 प्रतिशत रहने के आसार हैं।

कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश से प्राप्त माह मार्च से 21 अप्रैल तक सामान्य वर्षा 15.3 मिमी. के सापेक्ष 72.8 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो इस अवधि की वर्षा से 57.5 मिमी. अधिक है। प्रदेश के 75 जनपदों में से 71 जनपदों में अत्यधिक वर्षा (120 प्रतिशत से अधिक) प्राप्त हुई है, दो जनपदों में (सामान्य का 80–120 प्रतिशत) वर्षा तथा एक जनपद में सामान्य का 60–80 प्रतिशत वर्षा प्राप्त हुई है। जनपद श्रावस्ती की वर्षा का रिकार्ड उपलब्ध नहीं है। गत वर्ष 2014 में इस अवधि में प्रदेश को 24 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई थी। प्रदेश में इस अवधि में सबसे अधिक वर्षा बॉदा में रिकार्ड की गयी है जो इस अवधि की सामान्य वर्षा 9.9 मिमी. के सापेक्ष 118.7 मिमी. वर्षा हुई।

कृषि विभाग से प्राप्त जायद फसलों के आच्छादन आंकडों के अनुसार दिनांक 21 अप्रैल, 2015 (अनंतिम) तक कुल लक्ष्य 18.46 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 15.90 लाख हेक्टेयर की बुआई की जा चुकी है जो लक्ष्य का 86.14 प्रतिशत है। मक्का की बुआई लक्ष्य 0.9 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 1.01 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है जो लक्ष्य का 112.9 प्रतिशत है। बाजरे की प्रतिपूर्ति 0.5 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.48 लाख हेक्टेयर हुई जो लक्ष्य का 96.15 प्रतिशत है। मूंग की बुआई का लक्ष्य 1.21 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 1.54 लाख हेक्टेयर हुई जो लक्ष्य का 127.1 प्रतिशत है। उर्द की बुआई 0.68 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.47 लाख हेक्टेयर हो चुकी है जो लक्ष्य का 70.1 प्रतिशत है। इसी प्रकार अन्य फसलों में सूरजमुखी लक्ष्य के सापेक्ष 19.8 प्रतिशत, कपास लक्ष्य के सापेक्ष 74.8 प्रतिशत, जायद धान की बुआई लक्ष्य के सापेक्ष 94.0 प्रतिशत तथा चेना की बुआई लक्ष्य के सापेक्ष 32.5 प्रतिशत की जा चुकी है।

अतः प्रदेश में फसल एवं मौसम के इस परिप्रेक्ष्य में किसानों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- गेहूँ की कटाई के बाद फसल अवशेष को कदापि न जलायें बल्कि इसे खेत में सड़ाकर मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाये। गेहूँ के अवशेष को सड़ाने के लिए प्राथमिकता के आधार पर 5 टन/हे0 की दर से गोबर की खाद डालें। गोबर की खाद उपलब्ध न हो तो 20 किग्रा0/हे0 अतिरिक्त नत्रजन अथवा 2.5 किग्रा0/हे0 ट्राईकोडरमा बिरडी को मिट्टी या बालू में मिलाकर जुताई से पहले खेत में डालकर मिला दें।
- उर्द, मूँग, सूरजमुखी की फसलों एवं लीची व आम के बागों में पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिए आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- धान की रोपाई वाले प्रक्षेत्रों में हरी खाद के लिए सनई एवं ढ़ैंचा की बुआई करें। सभी जनपदों में कृषि विभाग के गोदामों पर ढेंचा का बीज उपलब्ध है।
- ब्लाक स्तर पर खरीफ फसलों के संकर बीजों की खरीदारी हेतु मेले का आयोजन किया जा रहा है जिसमें सभी बीज विक्रेता अपने स्टॉल लगाएंगे। कृषक फसलों के बीज यहाँ प्राप्त कर सकते हैं। बीज की सब्सिडी हेतु कृषक को रसीद के साथ जिला कृषि अधिकारी से अनुरोध करना होगा। सब्सिडी की रकम 10 दिनों में खातों में स्थानान्तरित होगी। कृषकों द्वारा इस मेले के लिए 26 मई तक पंजीकरण कराया जा सकता है।
- खरीफ 2015 के लिए फसलों के बीमा कराने की अवधि संशोधित राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना में 1 अप्रैल से 31 जुलाई व मौसम आधारित फसल बीमा योजना में 1 अप्रैल से 30 जून, 2015 तक है। अतः मौसम की अनिश्चितताओं को देखते हुए कृषकों से अनुरोध है कि अपनी फसलों का बीमा अपने नजदीकी सहकारी या व्यावसायिक बैंकों के माध्यम से अवश्य करायें।
- कृषि विभाग द्वारा चलायी जा रही पारदर्शी किसान योजना के अंतर्गत कृषि निवेश, कृषि यंत्र, बीज, कृषि रसायनों को प्राप्त करने हेतु अपना रजिस्ट्रेशन कराएँ।
- रबी फसलों में नुकसान की भरपाई हेतु कृषकों को सलाह दी जाती है कि वह कुक्कुट पालन, बकरी पालन, भेड़ पालन, भैंस पालन करें इससे उनकी अतिरिक्त आय होगी।
- कृषकों को सलाह दी जाती है कि वह जैव कीटनाशकों का प्रयोग करें। जैव कीटनाशकों पर कृषि विभाग द्वारा 75 प्रतिशत का अनुदान दिया जा रहा है।

गेहूँ की खेती

- वर्तमान मौसम गेहूँ की थ्रेसिंग व गेहूँ को सूखाने के लिए अनुकूल है अतः शीघ्रातिशीघ्र गेहूँ की थ्रेसिंग कर गेहूँ का भण्डारण करें।
- अनाज को धातु की बनी बखारियों अथवा कोठिलों, बोरियों या कमरे में जैसी सुविधा हो भण्डारण करने की व्यवस्था करें। भण्डारण के लिए धातु की बनी बखारी बहुत ही उपयुक्त है। भण्डारण के पूर्व कोठिलों तथा कमरे को साफ कर लें और दीवारों तथा फर्श पर मैलाथियान 50 प्रतिशत के घोल (1:100) को 3 लीटर प्रति 100 वर्ग मीटर की दर से छिड़काव के उपरान्त भण्ड़ारण करें। बखारी के ढक्कन पर पॉलीथीन लगाकर मिट्टी का लेप कर दें जिससे वायुरोधी हो जायें।

जायद फसलों की खेती

- वर्तमान मौसम में उर्द/मूँग की फसल में पीला चित्रवर्ण (मोजेक) रोग की संभावना रहती है अतः रोग दिखाई देते ही प्रभावित पौधों को सावधानीपूर्वक उखाड़ कर नष्ट (जला दें/गाड़ दें) कर दें।
- उर्द व मूंग में बुआई के 30 दिन के बाद ही सिंचाई करें। खेत में नमी कम होने पर सिंचाई करें तथा खरपतवार को नियंत्रित करें।
- सूरजमुखी की सिंचाई के उपरान्त शेष नत्रजन की आधी मात्रा की टॉप ड्रेसिंग कर दें और पौधों पर 10–15 सेमी0 मिट्टी चढ़ा दें।

धान की खेती

- ग्रीष्म ऋतु की जुताई सुनिश्चित करें तथा जुताई उपरान्त पटेला न लगायें।
- धान की अधिक अवधि वाली प्रजातियों जैसे स्वर्णा, साँभा मसूरी, महसूरी आदि के बीज, खाद व उर्वरक आदि की अग्रिम व्यवस्था नर्सरी डालने हेतु करें।

गन्ना की खेती

- फरवरी माह में बोई गई फसल में (60 दिन पर) सिंचाई उपरान्त 50 किग्रा. नत्रजन/हे. (110 किग्रा. यूरिया) की टॉपड्रेसिंग करें तथा गुड़ाई करें। शरदकालीन गन्ने में यदि यूरिया की टापड्रेसिंग अवशेष हो तो 60 किग्रा. नत्रजन/हे. (132 किग्रा. यूरिया) की टापड्रेसिंग करें।
- फरवरी–मार्च में रखे गए पेड़ी गन्ना में काला चिकटा नियंत्रण हेतु संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- पायरीला से ग्रसित पौधों की पत्तियों को तोड़कर जला दें तथा अधिक प्रकोप होने पर क्लोरपायरीफास का संस्तुति अनुसार उपचार करें।

- गन्ने की पत्तियों की संख्या के आधार पर 3–5 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें।
- अंकुर बेधक से ग्रसित पौधों को पतली खुरपी द्वारा भूमि सतह से काटकर चारे में प्रयोग करें। पत्तियों की निचली सतह पर अण्ड समूहों को देखकर पत्ती काटकर निकाल लें तथा अण्डों को नष्ट करें।
- गेहूँ के बाद यदि गन्ना बोना हो तो तत्काल सिंचाई कर ओट आने पर खेत तैयार कर बुवाई करें। बीज गन्ना यदि संभव हो तो ऊपरी 1/3 भाग का ही प्रयोग करें। बीज गन्ना को पानी में कम से कम रात भर डाल दें। दो या तीन आँख के टुकड़े काटकर 60 सेमी. की दूरी पर एम.ई.एम.सी. से उपचारित करें।
- भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाये रखने तथा उर्वरक व्यय में बचत हेतु सिंचाई उपरान्त 5 किग्रा. एजोटोबैक्टर व 5 किग्रा. पी.एस.बी./हे. का प्रयोग जड़ के पास कर गुड़ाई करें।
- हल्की कम अन्तर पर सिंचाई अपेक्षाकृत उपयोगी होती है, अतः आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- कीट के नियंत्रण हेतु 20–30 लाईट ट्रैप प्रति हे. का प्रयोग करें।

बागवानी

- नये रोपित बागों को अधिक तापक्रम व लू से बचाने हेतु थ्रैचिंग (छाया बनाना) करें।
- वर्तमान मौसम में आम के फलों को आंतरिक ऊतक क्षय (फ्रूट निक्रोसिस) से रोकथाम हेतु बोरेक्स 1 प्रतिशत (10 ग्राम/लीटर पानी) घोल का छिड़काव करें।
- आम के फलों को गिरने से बचाने के लिए नैप्थलीन एसिटिक एसिड (एन.ए.ए.) 20 पी.पी.एम. अथवा प्लेनोफिक्स 90 मिली/200 लीटर पानी का छिड़काव करें।
- जिन क्षेत्रों में आम में भुनगा, थ्रिप्स अथवा मिलीबग का प्रकोप हो वहाँ थायामेथोक्जाम (0.008 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
- आम में गुम्मा व्याधि से ग्रसित बौर को निकाल कर जला दें।
- लीची फल बेधक की रोकथाम हेतु डाइक्लोरोवास 1.5 मिली./ली. पानी में या मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली./ली. पानी की दर से फल बनने के पश्चात एक माह के अन्तर पर पर्णीय छिड़काव करें।
- केले में प्रति पेड़ 50–60 ग्राम यूरिया तथा 200–250 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश को गुड़ाई के बाद मिट्टी में मिलायें। इसके बाद आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा पुत्तियों की कटाई करें।
- नींबू वर्गीय फलों में नींबू की तितली के गिडार की रोकथाम हेतु 5 प्रतिशत एलसान धूल अथवा 50 प्रतिशत कार्बरिल का भुरकाव करें।

सब्जियों की खेती

- भिण्डी में पीतशिरा मोजेक रोग के प्रसारण को रोकने हेतु डाइमिथोएट 30 ई.सी., 1.6 मि.ली. प्रति ली. पानी की दर से छिड़काव करें।
- अदरक की बुआई के लिए उचित मौसम है अतः अदरक की बुआई सुनिश्चित करें।
- हल्दी की बुआई हेतु बीज की व्यवस्था कर लें ताकि 15 मई से 15 जून के बीच हल्दी की बुआई की जा सके।

पशुपालन

- पशुओं में रोग से बचाव के लिए टीका लगवायें।
- पशुओं को पोखरों का पानी न पिलायें इससे लीवर फ्लू व पेट के कीड़े होने की संभावना रहती है। दोपहर में पशुओं को छायादार स्थान पर रखें तथा उन्हें पर्याप्त साफ पानी पिलायें जिससे कि पशुओं को गर्मी से बचाया जा सके।
- जायद चारा फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें जिससे कि फसल की बढ़वार प्रभावित न होने पाये।

मत्स्य

- जिन तालाबों में मत्स्य पालन हो रहा है वहाँ कॉमन कार्प मत्स्य बीज का संचयन शीघ्र कर लें अन्यथा मत्स्य बीज समाप्त हो जायेगा।
- मत्स्य पालन हेतु नये तालाब का निर्माण एवं सुधार कार्य का उचित समय है अतः मत्स्य पालक मत्स्य पालन हेतु ऐसे तालाबों का चयन कर निर्माण/सुधार कार्य करायें जिससे वर्षभर 5–6 फीट जल स्तर सुनिश्चित हो सके। तालाबों के लिए जल की आपूर्ति का साधन होना चाहिए।
- नये तालाब के निर्माण के लिए मत्स्य विभाग के अधिकारियों से परामर्श करें जिससे कि सरकार द्वारा दिये जाने वाली आर्थिक सहायता की जानकारी प्राप्त की जा सके। नये तालाबों का निर्माण कार्य व पुराने तालाबों के सुधार का कार्य 20 जून तक अवश्य पूर्ण कर लें ताकि आगामी मौसम में मत्स्य पालन का कार्य प्रारम्भ कर सके।
- जिन मत्स्य पालकों के तालाबों में अवांछनीय मत्स्य प्रजातियां पायी जा रही हैं, उनमें बार–बार जाल चलाकर मछलियों को निकाल लें एवं तालाब को गर्मी में सुखाने के पश्चात् आगामी मौसम में मत्स्य पालन करें।
- जिन तालाबों में विगत 7–8 वर्षों से लगातार मत्स्य पालन किया जा रहा है एवं ऐसे तालाब जिनमें गत वर्ष मछलियों को कोई

रोग लगा हो उनको मई–जून में सुखा कर तथा 2 कु./हे. की दर से चूने का बुरकाव कर ट्रैक्टर से जुताई कराकर सूखने दें।

- जिन तालाबों में जलकुम्भी होती है और वह गर्मी में सूख जाते हैं उनमें ट्रैक्टर से जुताई करा दें। जलकुम्भी सड़कर खाद बन जायेगी जो बच जाये उसे एकत्रित कर जला दें।
- मत्स्य बीज उत्पादकों को यह परामर्श दिया जाता है कि वे नर मादा मछलियों को अलग–अलग तालाबों में रख दें। तालाब का जल स्तर 5–6 फुट बनाये रखें। तालाब में प्रतिदिन ताजा पानी भरें तथा ब्रूड फिश को प्रतिदिन मछलियों के शरीर भार का 2 प्रतिशत पूरक आहार प्रातःकाल दें।
- उत्प्रेरित प्रजनन से संबंधित आवश्यक सामग्री की व्यवस्था कर लें तथा प्रक्षेत्र/हेचरी पर पम्पसेट आदि मशीनरी की आवश्यकतानुसार मरम्मत करा लें। नर्सरियों को तैयार कर लें।
- मत्स्य पालक अपने जनपद में स्थापित मत्स्य पालक विकास अभिकरण के सम्पर्क में रहें।

वानिकी

- खैर, ऑवला, अर्जुन के बीजों की बुवाई यदि अभी तक पूरी न की गई हो तो अंकुरण कक्ष में तुरन्त पूर्ण कर लें। आवश्यकतानुसार पौंधों की सिंचाई करें।
- ऊसरीले क्षेत्रों में पौधे लगाने से पहले जिप्सम से उपचार कर लें।
- अंकुरित पौधों को रूट ट्रेनर में प्रिंक कर छाया घर में रख दें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक 13 मई, 2015 को प्रातः 11:00 बजे आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट **www.upcaronline.org** पर भी उपलब्ध है।
- क्राप वेदर वॉच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ इफको किसान संचार लिमिटेड के द्वारा प्रदेश के 9 लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. के रूप में कृषकों को प्रेषित की जा रही हैं।
- आंचलिक मौसम केन्द्र, मौसम विभाग, अमौसी द्वारा मुफ्त टेलीफोन सेवा प्रारम्भ की गई है, जिसका नम्बर **18001801717** है। अतः कृषक मौसम सम्बन्धी जानकारी इस फोन नम्बर पर प्राप्त करें।